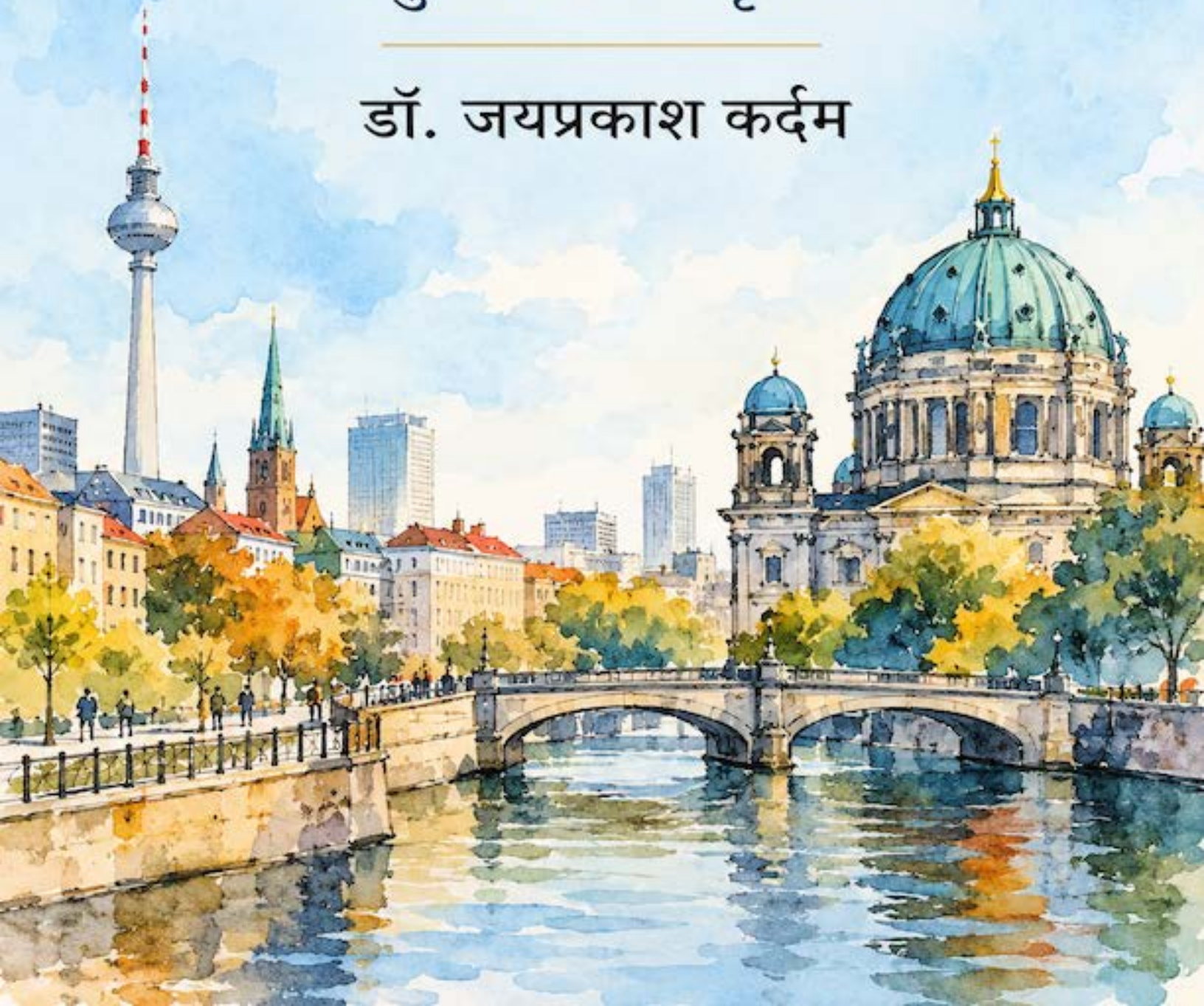
जर्मनी में दलित साहित्य

अनुभव और स्मृतियाँ

डॉ. जयप्रकाश कर्दम



जर्मनी में दलित साहित्य

अनुभव और स्मृतियाँ



डॉ. जयप्रकाश कर्दम

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अक्टूबर, 2026

© डॉ. जयप्रकाश कर्दम

1

मेरे लिए वह किसी स्वप्न से कम नहीं था अब एक दिन ऑफिस में मुझे जर्मनी से हॉन वाल्टर का फोन आया। हॉन वाल्टर ने बताया कि वह जर्मनी में इन्टरनेशनल दलित सॉलिडेरिटी नेटवर्क के को-आर्डिनेटर हैं। और वह 4 से 8 अक्टूबर, 2006 के दौरान जर्मनी के फ्रेंकफर्ट शहर में आयोजित होने जा रहे "विश्व पुस्तक मेला" के अवसर पर मुझे जर्मनी बुलाना चाहते हैं। मुझे लगा यह भी उसी तरह का कोई प्रस्ताव है जैसे प्रस्ताव मुझे पूर्व में कनाडा और इंग्लैण्ड आदि देशों से मिलते रहे हैं। कनाडा और इंग्लैण्ड में मुझे बुलाने का प्रस्ताव करने वालों ने भोजन, ठहरने व वाहन आदि सहित स्थानीय मेहमाननवाजी का खर्च वहन करने की बात की थी। हवाई जहाज का किराया मुझे स्वयं वहन करना था । इन प्रस्तावों को मैं नकार चुका था। हॉन वॉल्टर का फोन आया तो मैंने उनसे सीधे यही बात सबसे पहले जाननी चाही कि किराया तथा अन्य खर्च कौन वहन करेगा। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब हॉन वाल्टर ने बताया कि मेरा हवाई जहाज का किराया और वीजा शुल्क के अलावा जर्मनी में मेरे ठहरने, खाने व यात्रा आदि का समस्त खर्च वे वहन करेंगे। एकाएक मुझे उनके कहे गये शब्दों पर विश्वास नहीं हुआ। मुझे लगा कहीं हॉन वाल्टर के कहने या मेरे सुनने में कोई गलती तो नहीं हुई है। मैंने उनसे निमंत्रण पत्र ई-मेल या फैक्स द्वारा भेजने को कहा और यह भी कहा कि खर्च आदि को वहन करने के बारे में भी स्पष्ट रूप से

लिख दें। फोन पर बात समस्त होते ही मैं यह सोचकर फिर से अपने काम में लग गया कि देखते हैं क्या लिखकर आता है। अगले दिन मैंने अपना ई-मेल खोला तो पाया देखकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि इनकमिंग मेल बॉक्स में सबसे पहला मेल हॉन वाल्टर का था। फोन पर हुई चर्चा के अनुसार जर्मनी में आने के निमंत्रण के साथ-साथ खर्च आदि के बारे में सब कुछ स्पष्ट रूप से लिखा था।

हॉन वाल्टर नाम के इस व्यक्ति से मेरा पूर्व का कोई परिचय नहीं था, न मैं उनके बारे में कुछ जानता था। फिर क्यों एक अनजान आदमी ने मुझसे संपर्क किया। वह मुझे कैसे जानता है, मेरा फोन नम्बर उसे कहाँ से मिला। इस सबके बारे में मैंने सोचा तो मुझे लगा कि हो न हो इस सबके पीछे डॉ. हेंज वर्नर वेलसर है। डॉ. हेंज वर्नर वेलसर ने ही हॉन वाल्टर को मेरा नाम सुझाया होगा और उन्होंने ही मेरा फोन नम्बर भी दिया होगा।क्योंकि जर्मनी में डॉ. वेलसर के अलावा अन्य किसी व्यक्ति से मेरा परिचय नहीं था।

डॉ. वेलसर बॉन विश्वविद्यालय के इण्डोलॉजी विभाग में प्राध्यापक हैं तथा हिन्दी भाषा और साहित्य पढ़ाते हैं। दलित समाज, संस्कृति और साहित्य पर उन्होंने शोध किया है। अपने शोध कार्य के संबंध में वह दो बार भारत आ चुके हैं। पहली बार सन् 2003-04 के दौरान वह भारत आए थे तो लगभग आठ- नौ महीने वह यहाँ रहे थे। इस दौरान कई दलित लेखकों से उनका परिचय और घनिष्ठ संपर्क हुआ, उनमें से कुछेक के साथ उनकी अच्छी दोस्ती भी हुई। लेकिन उस दौरान मेरा उनसे कोई परिचय नहीं हो सका। न मुझे उनका कुछ

पता था और न वे मेरे संपर्क में आए। दलित लेखकों में से किसी ने उनको मेरे बारे में कुछ बताया; न मेरा उनसे परिचय कराया।

सन् 2004 में एक दिन मुझे जर्मनी से डॉ. वेलसर का पत्र मिला जिसमें उन्होंने मुझसे मिलने की इच्छा व्यक्ति की और यह भी लिखा कि वह शीघ्र ही भारत आने वाले हैं। मैंने डॉ. वेलसर के पत्र के जवाब में उनको पत्र लिखा तथा अपना ईमेल का पता व फोन नम्बर आदि उनको लिखकर भेजे। इसके बाद एक-दो बार हमारी फोन और ई-मेल के माध्यम से बातें हुई। जब वह भारत आए तब उनसे मुलाकात हुई। डॉ. वेसलर मेरे घर आए। दलित साहित्य और आंदोलन पर बातें हुई। डॉ. वेसलर ने मेरा साक्षात्कार लिया जो बाद में रमणिका गुप्ता द्वारा संपादित त्रैमासिक पत्रिका 'युद्धरत आम आदमी' के अक्टूबर-दिसंबर, 2006 अंक में प्रकाशित हुआ। उस रोज लगभग पूरा दिन डॉ. वेसलर मेरे घर पर रहे। मेरा पुस्तकालय देखा, कुछ पुस्तकों को भी उलटा-पलटा । मेरी पत्नी और बच्चों के साथ भी उन्होंने बातें कीं। शाम का खाना हमारे साथ खाया और रात में वह जंगपुरा स्थित अपने ठिकाने को, जहाँ पर वह ठहरे हुए थे, लौट गए।

इसके बाद हमारी दो-तीन बार और मुलाकातें हुई। एक बार वह मेरे दफ्तर आए और दूसरी बार हमारी मुलाकात तब हुई जब रवि जी ने कुछ दलित लेखकों व कार्यकत्ताओं को अपने घर रात्रि भोज पर आमंत्रित किया। उसी दौरान रमणिका गुप्ता जी के प्रयासों से साहित्य अकादमी की ओर से अकादमी के सभागार में डॉ. वेसलर का व्याख्यान भी हुआ।

सरकारी कार्य से हैदराबाद में होने के कारण मैं उस कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सका, और जब तक मैं हैदराबाद से लौटा डॉ. वेसलर जर्मनी के लिए लौट चुके थे।

डॉ. वेसलर से मेरा यही थोड़ा सा संपर्क रहा। इस थोड़े से संपर्क के आधार पर मैं यह उम्मीद नहीं कर सकता था कि जर्मनी में विश्व पुस्तक मेले जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर मुझे आमंत्रित किए जाने के लिए डॉ. वेसलर मेरे नाम पर सिफारिश कर सकते हैं। किन्तु जब डॉ. वेसलर का ई-मेल आया और उन्होंने मुझे पूरे कार्यक्रम की जानकारी दी तो मुझे सुखद आश्चर्य हुआ।

डॉ. वेसलर का दिल्ली में ही कई दलित लेखकों के साथ घनिष्ठ संपर्क था। कुछ के साथ तो दिल्ली प्रवास के दौरान उनका लगभग रोज़ का उठना-बैठना और खाना-पीना होता था। लेकिन उन्होंने मेरे नाम की ही सिफारिश क्यों की, मुझे ही क्यों इतना महत्वपूर्ण माना इस बारे में वेसलर ही कुछ कह सकते हैं।

निमंत्रण-पत्र के अनुसार मुझे सितम्बर 2006 के अंतिम सप्ताह से लेकर नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक अर्थात डेढ़ महीने जर्मनी में रहना था और कार्यक्रम के अनुसार जर्मनी के विभिन्न शहरों में रचना-पाठ के अलावा कुछ अन्य कार्यक्रमों में भागीदारी करनी थी। मैं इतनी लम्बी अवधि तक जर्मनी में नहीं रह सकता था। वस्तुतः संघ लोक सेवा आयोग द्वारा द्वितीय सचिव (भाषा एवं संस्कृति) के पद पर मेरा चयन हो चुका था और मुझे विदेश मंत्रालय से इस आशय का पत्र मिल चुका था कि मुझे 15 अक्टूबर तक भारतीय उच्चायोग,